स्वरेण रामभद्रमनुहरति (स्वर में राम के समान है।।

किम् , कार्यम् , अर्थः, प्रयोजनम् , गुणः तथा इसी प्रकार अन्य प्रयोजन प्रकट करने वाले शब्दों के योग में भी आवश्यक वस्तु तृतीया में रखी जाती है,

यथा- मूर्खेण पुत्रेण किम्,

तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्,

कोऽर्थः मूर्खेण भृत्येन,

देवपादानां सेवकैर्न प्रयोजनम्,

सानुरागेणापि मूर्खेण मित्रेण को गुणः।

येनाङ्गविकारः

यदि शरीर के किसी अङ्ग में विकृति दिखाई पड़े तो विकृत अङ्ग के वाचक शब्द में तृतीया विभक्ति हो जाती है,

यथा-नेत्रेण काणः (आँख से काना),

कर्णेन बधिरः (कान का बहरा),

देवदत्तः शिरसा खल्वाटोऽस्ति (देवदत्त शिर का गंजा है।)

हेतौ

कारण (हेतु) बोधक शब्दों में तृतीया होती हैं,

यथा-सः अध्ययनेन वसति (वह पढ़ने के लिए रहता है)।

विद्यया यशः भवति (विद्या से यश होता है।)

वास का हेतु 'अध्ययन' और यश का हेतु 'विद्या' है ।

सीता वीणावादनेन शीलामतिशेते (सीता वीणा बजाने में शीला से बढ़ गयी है।)

सा श्रियमपि रूपेणातिक्रामति (वह सुन्दरता में लक्ष्मी से बढ़ चढ़कर है।)

गम्यमानापि क्रिया कारकविभक्तौ प्रयोजिका

वाक्य में प्रयुक्त न होने पर भी यदि अर्थ से ही क्रिया समझ ली जाय तो भी वह कारक-व्यवस्था में प्रयोजिका हो जाती है,

यथा-"अलं महीपाल तव श्रमेण" (हे राजन् श्रम मत करो।)

अर्थात् "हे महीपाल श्रमेण साध्यं नास्ति" यहाँ साधन क्रिया गम्यमान है, श्रूयमाण नहीं। अतः श्रम में तृतीया हुई, क्योंकि साधन क्रिया के प्रति श्रम कारक है।

"शतेन शतेन साधुन् खादयति" अर्थात् सौ-सौ करके साधुओं को खिलाता है।

परिच्छिद्य (करके) गम्यमान क्रिया है।

दिवः कर्म च

दिव् धातु के साधकतम कारक की विकल्प से कर्म संज्ञा भी होती है,

जैसे- अक्षैः (अक्षान् वा) दीव्यति।

इसी प्रकार सम् पूर्वक ज्ञा धातु के कर्म की विकल्प से करण संज्ञा होती है। जैसे -

पित्रा (पितरं वा) सञ्जानीते (पिता के मेल में रहता है)

पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्

पृथक् (अलग), विना, नाना शब्दों के साथ द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी विभक्तियों में से कोई एक विभक्ति हो सकती है, जैसे –

दशरथो रामेण, रामात्, रामं वा विना नाजीवत् (राम के बिना दशरथ न जिये)।

जलं, जलेन, जलात् वा विना नरो न जीवति (जल के विना मनुष्य जीता नहीं रहता है)।

कौरवाः पाण्डवेभ्यः पृथगवसन् (कौरव पाण्डवों से अलग रहते थे)।

बिना या वर्जन अर्थ का वाचक होने पर ही 'नाना' के योग में द्वितीया, तृतीया या पञ्चमी होती हैं, जैसे-

नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा (स्त्री के बिना लोकयात्रा या जीवन निष्फल है।)